आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 369 ARYA SABHA MAURITIUS *16th July to 23rd July 2017*

Arya Bhawan, 1 Maharshi Dayanand St., Port Louis, Tel : 2122730, 2087504, Fax : 2103778, Email ID : aryamu@intnet.mu

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

नमस्कार मन्त्रः - Namaskāra Mantrah

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।। *यजु० १६ / ४२ ।।*

शब्दार्थ :- **नमः** - नमस्कार हो, **शम्भवाय** - सुख स्वरूप ईश्वर के लिए, **मयो भवाय** - सब सुखों को देने वाले के लिए, **शंकराय** - कल्याणकारी प्रभु के लिए, **मयस्कराय** - धर्मयुक्त कर्मों में नियुक्त करने वाले के लिए, **शिवाय** - अत्यन्त मंगलस्वरूप ईश्वर के लिए, **शिवतराय** - मोक्ष-सुख प्रदाता के लिए ।

भावार्थ :- उपर्युक्त यजुर्वेदीय मन्त्र में मंगलस्वरूप परमेश्वर को छः नामों से सम्बोधित किया गया - शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव और शिवतर। प्रस्तुत मन्त्र का भाव इस प्रकार है :- जो सुखस्वरूप, संसार के उत्तम सुखों को देने वाला, कल्याण-कर्ता मोक्षस्वरूप, अपने भक्तों को सुख देने वाला और धर्म कार्यों में युक्त करने वाला, अत्यन्त मंगल रूप तथा मोक्षरूप का प्रदाता है, उस प्रभु को हमारा बारम्बार नमस्कार हो ।

Om namaḥ śambhavāya cha mayōbhavāya cha namaḥ śaḍkarāya cha mayaskaraya cha namah śivāya cha śivatarāya cha.

Meaning of words :- **namaḥ** - salutations to, **śambhavāya** - All peace, **cha** - and, **mayōbhava** - All-bliss, **Shankara** - All-benevolent, **mayaskara** - Giver of all happiness, **Shiva** - All-auspiciousness and, **śivatarāya** - the most Auspicious Being.

Purport :- My salutations to the Lord who is Eternal bliss and the source of peace. My salutations to the Benefactor of all and the bestower of blessings. O Giver of all prosperity, happiness and peace we offer You our salutations - You are Shiva - the auspicious one. We surrender ourselves to you.

Explanation :- Swami Dayananda taught us, in keeping with the teachings of the Vedas, that because of His innumerable qualities, infinite nature and attributes, God has countless names. He is the Creator, hence He is called 'Brahma'. He is the Sustainer, Preserver and is Omnipresent, so He is called 'Vishnu'. He is Bliss and the Benefactor of all. Therefore, He is called 'Shiva'.

Dr O.N. Gangoo

श्रावणी पर्व : एक विहंगम दृष्टि

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, जी.ओ.एस.के, आर्य रत्न - प्रधान आर्यसभा

श्रावणी पर्व का इतिहास अति प्राचीन है। यह वैदिक पर्व आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व नगण्य हो गया था। हिन्दू समाज में त्योहारों का बाहुल्य है। आर्यसमाज के सामने प्रश्न था कि पारम्परिक पर्वों में से किन-किन पर्वों को मान्यता दी जाए, ताकि समस्त आर्य जगत् में त्योहार एक प्रकार से मनाए जाएँ। सन् १९२४ ई० में महर्षि दयानन्द की जन्म-शताब्दी के अवसर पर महात्मा नारायण स्वामी जी के निवेदन पर आर्य लेखक पंडित भवानीप्रसाद जी ने 'आर्य पर्व पद्धति' नामक पुस्तक तैयार करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने अपनी रचना में 'श्रावणी

उपाकर्म' को सम्मिलित किया। तब से आर्यसमाज श्रावणी पर्व मनाने लगा।

मॉरीशस में सर्वप्रथम पूज्य स्वामी अखिलानन्द जी महाराज ने श्रावणी यज्ञ प्रारम्भ किया था। सन् १९६६ में जब त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज का मंदिर बनकर तैयार हुआ, तब मंगलवार ३० अगस्त १९६६ को स्वामी अखिलानन्द जी के कर-कमलों द्वारा इस मंदिर का उद्घाटन हुआ था। उद्घाटन के अवसर पर ३० अगस्त १९६६ से ४ सितम्बर १९६६ तक छः दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न करके श्रावणी पर्व मनाया गया था। श्रावणी का यह प्रथम वर्ष था। वेद-पाठ पंडित रामलगन रामरूप जी द्वारा हुआ था। व्याख्यानदाता थे – पंडित शिवदत्त जी, *विद्यावाचस्पति*, पंडित बेणीमाधव सतीराम जी, पंडिता द्रोपदी माताबदल जी और श्री दीपनारायण बीगन,*शास्त्री,एम०ए०* ।

इसके अगले वर्ष १९६७ में २१ जुलाई से २० अगस्त १९६७ तक, पूरे एक मास तक आर्यसभा के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष, श्री ब्रह्मदत्त नन्दलाल जी ने अपने प्रांगण में एक विशाल पंडाल बनाकर 'ब्रह्म पारायण महायज्ञ' अर्थात् चारों वेदों का पारायण करवाया था। यह द्वितीय वर्ष का 'श्रावणी पर्व' था। यज्ञाधिष्ठाता स्वामी अखिलानन्द जी महाराज थे। इस कार्य के लिए श्री ब्रह्मदत्त नन्दलाल जी ने अपने खर्च पर स्वामी अखिलानन्द जी महाराज को भारत से आमन्त्रित किया था।

आज श्रावणी पर्व बड़ा लोकप्रिय हो गया है। रविवार ९ जुलाई को 'गुरु पूर्णिमा' के शुभावसर पर मोहनलाल मोहित हॉल, आर्य भवन में बाईस हवन कुण्डों में नौ ज़िलों से आये हुए श्रद्धालु यजमानों एवं पुरोहित-पुरोहिताओं ने एक वृहद् यज्ञ द्वारा श्रावण मास में होने वाले यज्ञों का शुभारम्भ किया। इस कार्यक्रम में भारत के तीन धर्मोपदेशक - स्वामी ऋत्तस्पति जी परिव्राजक, आचार्य जीतेन्द्र पुरुषार्थी एवं आचार्य योगेन्द्र जी उपस्थित हो गए थे।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

दानवीर पंडित गयासिंह

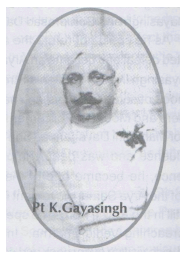

मॉरीशस में आर्यसमाज के आंदोलन करने में हमारे निःस्वार्थ समाज सेवियों एवं वैदिक धर्मावलम्बियों का सराहनीय योगदान है। उनके तपो-त्याग और कठिन पुरुषार्थ से यहाँ आर्यसमाज गतिशील है। अनेक उदार तथा दानवीर परोपकारियों के आर्थिक सहयोग से आज हमारे देश के शहरों और गाँवों में आर्यसमाज के मंदिर स्थापित हैं।

हमारे दानवीरों की दानवीरता के बल पर देश-व्यापी करोड़ों की जायदाद है। स्कूल और आश्रम बनाए गए हैं। छात्र-छात्राओं की शिक्षा एवं अनाथ आश्रितों की सेवाएँ की जा रही हैं। भव्य भवनों में सुगमतापूर्वक धार्मिक और सांस्कृतिक आदि महोत्सव आयोजित किए जा रहे हैं। हम उन सभी कर्मठ, महात्यागी और सत्संगी सज्जनों के प्रति ऋणी हैं।

हमारे दानवीरों में स्वर्गीय पंडित गयासिंह लेखावनसिंह जी एक महादानी माने जाते हैं, जिन्होंने अपने निवास स्थान को आश्रम बनाकर अनाथ बच्चों, बेसहारे वृद्धों और दीन-दुखियों की सेवाएँ दीर्घकाल तक कीं। अपने घर तथा करोड़ों मूल्यों की ज़मीन आर्यसमाज के नाम कर दिए। दयालु गयासिंह और उनकी धर्मपत्नी भाग्यवती देवी जी की सेवा-भावना से आज गयासिंह आश्रम में दीन-दुखी आश्रितों की सेवाएँ सुगमतापूर्वक हो रही हैं। उन दान-दाताओं के प्रति हम नत-मस्तक हैं।

गयासिंह आश्रम की ५० वीं वर्षगाँठ के अवसर पर आश्रम के नाम पर आर्योदय का जो विशेषांक निकाला गया था, उसमें प्रधान मन्त्री माननीय अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने दानवीर और दया की मूर्ति पं० गयासिंह की दानशीलता से प्रभावित होकर अपने संदेश में कहा था :– 'आज से ५० वर्ष पूर्व सन् १९४४ ई० में जब द्वितीय विश्व महायुद्ध का आतंक सभी देशों की जातियों, परिवारों पर छाया हुआ था – लोग रोटी, कपड़े के लिए मोहताज़ थे, ऐसे कठिन काल में पं० गयासिंह खेलावनसिंह जी ने अनाथ बच्चों के लिए अपने ही घर में एक अनाथालय खोला था। यह बहुत ही उत्साह और उदार विचार का काम है। ऐसे देश तथा जाति के भक्त के सामने हम नत-मस्तक होते हैं। उनका सार्वजनिक संदेश यह था :– आज के इस भौतिक विकास के चकाचौंध में पड़कर कुछ लोग भूल जाते हैं कि संसार में कुछ ऐसे भी लोग हैं, जिनको सहायता तथा सेवा की आवश्यकता होती है। जिसका संसार में कोई नहीं है, ऐसे लोगों को समाज के प्यार और सेवा की आवश्यकता होती है।

आज हमारे देश में ऐसे दानी हैं, जो आर्थिक दान देकर आर्यसमाज के उत्थान में सहयोग दे रहे हैं, जिनकी दानशीलता के बल पर बड़े-बड़े भवन बनाए गए हैं। शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित हैं, आश्रितों के लिए आश्रम कायम हैं और धार्मिक स्थल हैं। हम उन दानियों के प्रति आभारी हैं। हमारी धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएँ तो उन उदार और दानवीर जनों की सहायता ही से गतिशील हैं और भविष्य में गतिमान रहेंगे ।

निःस्वार्थ, कर्मवीर, दयालु, परोपकारी तथा दानवीर पं० गयासिंह की १४४ वीं वर्षगाँठ के अवसर पर हम सभी को उस आदर्श आर्य पुत्र से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए, ताकि हम भौतिकवादी के चक्रव्युह में फँसे रहकर भी उन अनाथों, असहायों और दीन-दुखियों की सेवा में तत्पर रहें, नित्य सामाजिक सेवाओं में चरितार्थ रहे। आज के युवक-युवतियाँ उनके अनुकरणीय हों।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

पहली वर्षगाँठ

एक साल पहले रोड्रिग टापू में जिस आर्यसमाज की स्थापना पिछले साल की गई थी, वह पूरे एक साल का हो गया। शनिवार दि० १ ली जुलाई २०१७ को शाम के ४.०० बजे बड़ी धूमधाम से उसकी पहली वर्षगाँठ मनाई गयी, जिसमें हम मॉरीशस से हवाई जहाज़ द्वारा लगभग ३० आर्य समाजी उपस्थित थे। मौके के मुख्य अतिथि कला एवं संस्कृति मंत्री पृथ्वीराज रूपन अपनी पी.एस. श्रीमती लखीनारायण के साथ थे। राष्ट्रीय पुस्तकालय की अध्यक्षा श्रीमती रामनाथ अपने एक अफ़सर धर्मेन्द्र जोधन को लेकर कार्य की शोभा बढ़ा रही थी।

आर्यसभा के महामंत्री सत्यदेव प्रीतम ने कार्य का संचालन करते हुए अपनी खुशी ज़ाहिर की और कहा कि बहुत अच्छी बात है कि वेद मंत्रों का उच्चारण सुदूर टापू में हो रहा है। डॉ० लालबिहारी ने आर्यसमाज द्वारा हो रही हिन्दी की पढ़ाई की प्रशंसा की।

मिनिस्टर ने भाई रमणीक चितू के बारे में बोलते हुए कहा कि वह एक अच्छा कार्य कर रहा है। उन्हें आशा है कि इस महान् कार्य में परमपिता परमात्मा उसकी सहायता करे।

आर्यसभा के मानेजर श्री सुबीराज सोब्रण ने प्रोजेक्टर द्वारा मोरिशस में आर्यसभा के इतिहास की एक झलक प्रस्तुत की, जिसकी सराहना सभी लोगों ने की।

आरम्भ में आर्य सभा के पुरोहित पंडित पायदीगाडू ने वैदिक यज्ञ मंत्रों से 'फ्लाँ ब्यायाँ' होटल के हॉल को गुंजायमान कर दिया।

श्रावणी महोत्सव

रविवार ता० ०९ जुलाई, २०१७ गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आर्य सभा मोरिशस ने अपने वेद-प्रचार समिति, ज़िला परिषदों और पुरोहित मण्डल के सहयोग से एक बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया था, जिसमें २४ हवनकुण्ड थे। यह समारोह हर साल गुरु पूर्णिमा को ही रखते हैं, जिसका दो घण्टे का सीधा प्रसारण स्थानीय दूरदर्शन द्वारा होता है।

अगले सोमवार १० जुलाई को सावन के महीने की शुरुआत थी। उस दिन से पूरे सावन मास के दौरान मोरिशस के सभी शाखा समाजों में महीने भर यज्ञ-हवन, सत्संग जारी रहेगा। यही वजह है कि श्रावण के महीने को वेद-मास से सम्बोधन करते हैं।

मौके पर भारत से आये हुए स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक का लघु भाषण हुआ। सभा के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू ने ऋग्वेद के पहले मंत्र को लेकर श्रोताओं को बताया कि नागरीलिपि के प्रारम्भिक स्वर-व्यञ्जन बीज रूप में निहित है।

प्रारम्भ में पं० धर्मेन्द्र रिकाय के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के बीच-बीच में भाषण, भजन और अन्त में धन्यवाद समर्पण हुआ।

कार्य का संचालन बखूबी से सभा मंत्री सत्यदेव प्रीतम द्वारा हुआ। ठीक समय पर कार्य समाप्त हुआ।

पृष्ठ १ का शेष भाग

इस लेख को आगे बढ़ाने से पूर्व 'श्रावणी उपाकर्म' – इन दोनों शब्दों के अर्थ पर विचार कर
लेना समीचीन होगा। सताईस नक्षत्रों में 'श्रवण' एक है। इसी नक्षत्र के नाम पर 'श्रावण' मास का नामकरण हुआ है। इस मास की पूर्णिमा को 'श्रावणी उपाकर्म' (प्रारम्भ) करने का विधान किया गया है। यह उपाकर्म 'रक्षाबन्धन' (राखी) पर्व के दिन होता है। मनुस्मृति के अनुसार वेदाध्ययन का उपाकर्म (शुरुआत) श्रावण मास की पूर्णिमा से करके पुष्य नक्षत्र वाली पूर्णिमा को उत्सर्जन (समाप्त) करना चाहिए।

आर्यसमाज के सुविख्यात विद्वान्, चारों वेदों के भाष्यकार, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री जी इस पर्व पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं – 'श्रावणी नाम इस पर्व का क्यों है? इसका उत्तर यह कि श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व होता है अतः यह श्रावणी है। इसी श्रावणी पूर्णिमा के आधार पर ही इस मास का नाम भी श्रावण मास है। इस श्रावणी की भी विधि है और वह गृह्यसूत्रों और हमारी पर्व पद्धति में लिखी है – जो प्रत्येक आर्य और आर्यसमाज को करनी चाहिए।'(आर्य पर्व पद्धति, पृ० १२७)

आचार्य वैद्यनाथ जी आगे लिखते हैं – *"श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान् पर्व है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्यापन और अध्ययन करने वालों से है। गृह्यसूत्रों के अनुसार इस पर्व का सीधा सम्बन्ध वेद और वैदिकों से दिखलाया गया है। यह पर्व जहाँ पर्व है, वहाँ यह एक गृह्य कर्म भी है। गृह्यसूत्रों के अनुसार श्रावणी कर्म भी इसी अवसर पर होता है और उपाकर्म वेदाध्ययन का प्रारम्भ होता है। चार मास वर्षा के होते हैं। इसमें बराबर वेदाध्ययन चलता रहता था और पौष में जाकर उत्सर्ग किया जाता है।"(आर्य पर्व पद्धति, पृ० १२७)*

उपर्युक्त कथन के आधार पर ही आर्यसभा के तत्वावधान में विभिन्न शाखा समाजों में श्रावणी पर्व मनाने की व्यवस्था की जाती है। स्मरण रहे कि आर्यसमाज एक सुधारवादी आन्दोलन है, जिसने अपने जन्मकाल से अब तक अविद्या, अज्ञान और अन्धविश्वास के विरुद्ध अथक लड़ाई लड़ी है। श्री राम द्वारा लंका-विजय के बाद दीपावली मनाने की बात वर्षों से चल पड़ी है और होली मनाने का कारण होलिका-दहन से जोड़ दिया गया है, जबकि इन पर्वों के मनाने का तथ्य कुछ और ही है । इसी प्रकार का अज्ञान कहीं श्रावणी पर्व से जुड़ न जाए।

श्रावण महीने में जो पर्व मनाते हैं, उसे 'श्रावणी पर्व' और इस मास में जो यज्ञ करते हैं, उसे 'श्रावणी यज्ञ' कहते हैं। श्रावण मास के बाद भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, अगहन, पौष आदि मास आते हैं। यदि अन्य महीनों में यज्ञ का अनुष्ठान हो तो वह श्रावणी यज्ञ से कैसे अभिहित किया जा सकेगा ?

हमारे ऋषि-महर्षि समाजशास्त्री थे। वे एक स्वस्थ समाज के निर्माण में प्रयत्नशील थे। उन्होंने वर्षाकालीन मासों में वृहद् यज्ञों और वेद-स्वाध्याय का विधान किया है अर्थात् श्रावण मास में वेद-स्वाध्याय का उपाकर्म और पौष मास में उत्सर्जन। यदि हम चार महीनों तक लगातार यज्ञ करें और नाम दें केवल 'श्रावणी यज्ञ' तो हम एक नये अज्ञान को जन्म देंगे, जो आर्यसमाज के मन्तव्यों के विरुद्ध है।

आर्य जगत् में ज्ञान का प्रचार-प्रसार होना चाहिए । हम श्रावण मास में यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, जो वर्तमान में दो-ढाई महीनों तक शाखा-समाजों और श्रद्धालु परिवारों के गृहों पर होता रहता है। चूँकि यह यज्ञ एवं वेद-स्वाध्याय चौमासे तक चलता है, इसलिए श्रावण मास के पश्चात् सम्पन्न होने वाले यज्ञ को 'चौमासे का यज्ञ' कहना ही यथोचित है, न कि 'श्रावणी यज्ञ'।

आर्य पर्व पद्धति के प्रणेता पंडित भवानीप्रसाद जी लिखते हैं – "आजकल की श्रावणी को प्राचीनकाल के उपाकर्म-उत्सर्जन वेद-स्वाध्याय रूप ऋषितर्पण और वर्षाकालीन बृहद् हवन-यज्ञ (*वर्षाचातुर्मास्येष्टि*) का विकृत तथा नाममात्र शेष स्मारक समझना चाहिए और प्राचीन प्रणाली के पुनरुज्जीवनार्थ उसको बीज मात्र मानकर उसको अंकुरित करके पत्रपुष्पसफल-समन्वित विशाल वृक्ष का रूप देने का उद्योग करना चाहिए।" (*आर्य पर्व पद्धति, पृ० १२६*)

आर्य सभा मॉरीशस ने 'श्रावण मास' को 'वेद-मास' घोषित किया है । आर्य जगत् को उचित है कि श्रावणी के दिन बृहद् हवन और विधिपूर्वक उपाकर्म करके वेद तथा वैदिक ग्रन्थों के विशेष स्वाध्याय का उपाकर्म करें । यदि श्रावण मास की समाप्ति पर यज्ञ सम्पन्न होता रहे तो उसे 'श्रावणी यज्ञ' कहना एक भ्रामक प्रथा को प्रचलित करना होगा ।

OM

Moka Arya Zila Parishad

Shravani Programme 2017

Date	Time	Venue	Purohit	Chapter
1. 18/07 Tues	1.30p.m-3.00p.m	Lower Dagotiere AMS	Pta. S. Taucoory	7
2. 22/07 Sat.	3.00p.m-6.00p.m	Dubreuil AS/AMS	Pta. R.Saulick	8
3. 23/07 Sun.	8.30a.m-10.00a.m	Upper Dagotiere A.S/AMS	Pt. S. Boojhawon / Pta. S. Taucoory	9
4. 27/07 Thurs.	7.00p.m-9.00p.m	Petit Paquet AS	Pta. A. Choti	10
5. 30/07 Sun.	8.30a.m-10.00a.m	Upper Dagotiere A.S/AMS	Pt. S. Boojhawon / Pta. S. Taucoory	11
6. 01/08 Tues.	4.00 p.m.	Camp Thorel AS/AMS	Pt. S. Fakoo	
7. 02/08 Wed.	4.00 p.m.	Camp Thorel AS/AMS	Pt. S. Fakoo	12
8. 03/08 Thurs.	1.00p.m-2.30p.m	L'Assurance AMS	Pta. S. Taucoory	13
9. 03/08 "	2.30 p.m	Quartier Militaire AS/AMS	Pta. C.Rajoo / Pta. R.Saulick/Pt. S.Fakoo	14/15
10. 04/08 Fri.	2.30p.m-3.30p.m	Quartier Militaire AS/AMS	Pta. C.Rajoo / Pta. R.Saulick / Pt. S.Fakoo	16,17
11. 04/08 Fri.	4.00p.m-6.00p.m	Moka Mahila Samaj	Pta. A.Maheeputh / Pta. V. Hemraz	18
12. 5/08 Sat.	2.30p.m-5.00p.m	Quartier Militaire AS/AMS	Pta. A.Maheeputh / Pta. V. Hemraz	19/20
13. 5/08 Sat.	3.30p.m-5.00p.m	Upper Dagotiere A.S/AMS	Pt. S. Boojhawon / Pta. S. Taucoory	21
14. 5/08 Sat.	4.00p.m-6.00p.m	Moka AS/AMS	Pta. A.Maheeputh / Pta. V. Hemraz	22
15. 6/08 Sun.	8.30a.m-11.00a.m	Upper Dagotiere A.S/AMS	Pt. S. Boojhawon / Pta. S. Taucoory	23
16. 6/08 Sun.	2.30p.m-4.00p.m	Petit Verger AS/AMS	Pta. A. Maheeputh	24/25
17. 6/08 Sun.	4.00p.m-6.00p.m	Moka AS/AMS	Pta. A.Maheeputh / Pta. V. Hemraz	26/27
18. 13/08 Sun.	3.30p.m-6.00p.m	Camp Thorel AS/AMS	Pt. Sateeanand Fakoo	28/29
19. 1/09 Fri	2.30 p.m.-5.00p.m	Nouvelle Decouverte AS/AMS	Pt. S.Fakoo, Pta. A.Choti	30,31,32
20. 2/09 Sat.	2.30 p.m.-5.00p.m	Nouvelle Decouverte AS/AMS	Pt. S.Fakoo, Pta. A.Choti	33,34,35
21. 3/09 Sun.	8.00a.m-11.00a.m	Nouvelle Decouverte AS/AMS	Pt. S.Fakoo, Pta. A.Choti	36,37,38,40

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius

प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम,आर्य भूषण*
(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*

इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

OM

Plaines Wilhems Arya Zila Parishad

PROGRAMME Shrawani 2017

Date	Time	Venue	Purohit/Purohita
20/07	10.00-11.30	Highlands A.M.S,Ballgobeen Ashram	Pta. R. Saulick
21/07	8.30-10.30	Ballgobeen Ashram	Pt. K. Kheddoo
21/07	16.00-18.00	Quinze Cantons A.S.	Pt. Custneea/ Ach. Brahmadeo
22/07	16.00-18.00	Quinze Cantons A.S.	Pt. Seeraj / Pt. gujadhur
23/07	09.00-12.00	" "	Pt. Seeraj
23/07	08.30-11.30	Paillotte A.S.	Pt. Seeraj/Pt. Custnea/Pt.Mahadeo
24/07	08.30-10.30	Ballgobeen Ashram	Pt. K. Khedoo
25/07	08.30-10.30	Ballgobeen Ashram	Pta. R. Saulick
26/07	08.30-10.30	" "	Pt. K. Khedoo
26/07	19.00-20.30	Sangram A.S/AMS	Pt. K. Khedoo
27/07	10.00-11.30	Ballgobeen Ashram	Pta. Gokhul
28/07	08.30-10.30	" "	Pta. R. Saulick
28/07	16.30-17.30	Glen-Park A.S.	Pt. Seeraj
28/07	16.00-18.00	Hermitage A.S/A.M.S	Pt. Beekhary / Pta. Bahorun
29/07	16.00-18.00	Hermitage A.S/A.M.S	Pt. Beekhary / Pta. Bahorun
30/07	08.30-12.00	" "	Pta. R. Saulick
30/07	15.30-17.00	Vacoas A.S.	Pt. Chooroomony/Pt. Seeraj/Pt. K. Khedoo
31/07	08.30-10.30	Ballgobeen Ashram	Pt. K. Khedoo
01/08	08.30-10.30	" "	Pta. R. Saulick
02/08	08.30-10.30	" "	Pt. K. Khedoo
02/08	19.00-20.30	Sangram A.S / A.M.S.	Pt. K. Khedoo
03/08	10.00-11.30	Ballgobeen Ashram	Pta. Gokhul

..... to be continued

OM

Riv. du Rempart Arya Zila Parishad

PROGRAMME Shrawani 2017

Date	Time	Venue	Purohit/Purohita
20/07	3.30 p.m	Petit Raffray AMS 459	Pta. S.K. Baurun
20/07	5.30 P.M	Goodlands AS/AMS 22/270	Pt. Gopal / Pta. S.K. Baurun
21/07	5.00 P.M	Grand Bay AS/AMS 82/428	Pt. C. Jodhun, Ach. S.Badree
21/07	5.00 P.M	Bois Rouge – Goodlands AS 126	Pta.G. Mudhoo
22/07	8.00 a.m	L'Esperance Trebuchet AS/AMS 9/412	Pta. Chummun
23/07	9.00 A.M	Melle Jeanne G.Lands	Pta.G. Mudhoo
23/07	10.00 A.M	Atlas Rd, G. Lands AS36	Pta.G. Mudhoo
23/07	8.00 a.m	L'Esperance Trebuchet AS/AMS 9/412	Pta. Chummun
23/07	8.00 A.M	Plaine des Roches AS/AMS 117/301	Pt. C. Beeharry
24/07	4.30 P.M	Triangle AS/AMS162/237	Pta. S. Ramphul
25/07	5.00 P.M	Amaury AS/AMS 153/257	Pta. V.L. Reechaye
26/07	4.00 P.M	Poudre D'or Hamlet AMS 73	Ach. S.Badree
27/07	3.30 P.M	Roche Noires AS/AMS 75/347	Pta.S. Greedhur
27/07	5.00 P.M	Goodlands AS/AMS22	Pt. C.Gopal
28/07	4.00 P.M	Roche Noires AS 104	Pt. D. Reechaye
28/07	5.00 P.M	Roche Noires AS 104	Pt. D. Reechaye
28/07	5.00 P.M	Grand Bay AS/AMS 82/428	Pt. C. Jodhun, Ach. S.Badree
28/07	5.00 P.M	Bois Rouge – Goodlands AS 126	Pta.G. Mudhoo
28/07	6.30 P.M	Grand Gaube AS 206	Pt. C.Gopal
28/07	7.00 P.M	Melville AS 136	Pta. S.K. Baurun
29/07	8.00 a.m	L'Esperance Trebuchet AS/AMS 9/412	Pta. Chummun
30/07	8.00 A.M	L'Esperance Piton AS 6	Pt. D. Reechaye
30/07	8.00 A.M	L'Esperance Trebuchet AS/AMS 9/412	Pta. Chummun
30/07	6.00 A.M	Petit Raffray AS 35	Ach. S.Badree
30/07	8.00 A.M	Plaine des Roches AS/AMS 117/301	Pt. C. Beeharry
30/07	8.00 A.M	Allee Mangues AS 146	Pta.S. Greedhur
31/07	4.30 P.M	Triangle AS/AMS 162/237	Pta. S. Ramphul
01/08	5.00 P.M	Amaury AS/AMS153/257	Pta. V.L. Reechaye
03/08	3.30 p.m	Melle Jeanne G.Lands AS 261	Pt. C.Gopal
03/08	5.00 P.M	Goodlands AS AMS 22/270	Pt. C.Gopal
04/08	5.00 P.M	Bois Rouge – Goodlands AS 126	Pta.G. Mudhoo
04/08	5.00 P.M	Grand Bay AS/AMS 82/428	Pt. C. Jodhun,Ach. S.Badree
04/08	5.00 P.M	Amaury AS/AMS 378/410	Pta. V.L. Reechaye
04/08	6.30 P.M	Roche Terre AS 369	Pt. D. Gopal
08/08	5.00 p.m	Plaines des Roches AS/AMS 117/301	Pt. C. Beeharry
08/08	5.00p.m	Reunion Maurel AS15	Pt.D. Gopal
08/08	6.00a.m	Petit Raffray AS 35	Ach. S.Badree
08/08	8.00 A.M	L'Esperance Trebuchet AS/AMS 9/412	Pta. Chummun
08/08	8.00 A.M	Cottage AS 81	Pt.D. Gopal
08/08	8.00 A.M	Poudre D'or Village AS 113	Pt. D. Reechaye

OM

PAMPLEMOUSSES ARYA ZILA PARISHAD

PROGRAMME SHRAWANI 2017

DATE	TIME	VENUE	PUROHIT/PUROHITA
20/07	4.00p.m	Morcellement AS 129	Pt. M. Jeerakhan
20/07	3.00 p.m	Jouvence AS/AMS	Pt. P. Sohur, Pta. D. Pockraz
21/07	4.00 p.m	Gowsal AS/AMS 50,84,262	Pt. M. Jeerakhan / Pta. Ramkalawon
21/ 07	4.00 p.m	Creve Coeur AS/AMS 182/396	Pt. P. Sohur, Pta. D. Pockraz, Pta. P. Lutchmun
21/07	6.00 p.m	Mount AS 72	Pt. S. Poonye
21/07	3.30 p.m	Pte Pte aux Piments	Pta V. Jahul, Pta. V. Ramnauth
22/07	3.00 p.m	Bois Rouge AS/AMS	Pta. L. Mungroo
23/07	9.00 a.m	Derning AS/AMS 15/159	Pta. Mookhram / Pta. V. Ramnauth
25/07	3.30 p.m	Pamplemousses AS 108	Pt. J. Aukhojee / Pta. L. Mungroo
25/07	3.00 p.m	Moonsamy AMS 56	Pta. Mookhram / Pta S. Chummun
25/07	3.00 p.m	Camp la Boue AS /AMS	Pt. P. Sohur, Pta. D. Pockraz
26/07	4.00 p.m	Bois Mangues AS 26/12	Pta.P. Lutchmun / Pt. M. Jeerakhan
28/07	2.30 p.m	Dispensary Rd, AS 290	Pta. V. Ramnauth / Pta. D. Chintamunee
29/07	3.00 p.m	Calebasses AS 40	Pta. L. Mungroo / Pta. Ramkalawon
30.07	9.00 a.m	Hamlet AS 396	Pta.P. Lutchmun / Pt. M. Jeerakhan

Trois Boutiques Triolet – Wednesday 02 August, Thursday 03 August, Friday 04 August, Saturday 05 August & Sunday 06 August –Morning & Evening – Pt. Darshan & Pta. M. Ramnauth.

Fond du Sac AS/AMS 114/102----Everyday

Contact No : Dr J. Lallbeeharry — 5 7681201 Pt. D. Dookhee -- 57646121

Pamplemousses A.Z.P.	J. Lallbeeharry	L.Ramdhony	J. Ramkhalawan
	President	*Secretary*	*Treasurer*

OM

FLACQ ARYA ZILA PARISHAD

PROGRAMME SHRAWANI 2017

DATE	TIME	VENUE	PUROHIT / PUROHITA
Thurs. 20/07	3.30 p.m	Deux Freres AS/AMS	Pta. S. Doomun, Pt. D. Ramsurrun
Thurs. 20/07	2.00 p.m	Shanti Nagar AMS	Pta. P. Durumdar
Thurs. 20/07	2.00 p.m	La Tapie AMS	Pta. S. Doomun
Thurs. 20/07	4.30 p.m	Ernest Florent	Pt. S. Ramkalawon
Thurs. 20/07	4.00 p.m	Pont Praslin AS/AMS	Pt. P. Ramdu,Pta. S. Domun
Thurs. 20/07	4.00 P.M	Bon Accueil AS/AMS	Pt. N. Domun, Pta. S. Domun
Thurs. 20/07	4.00 p.m	Mare la Chaux	Pta. P. Lilkunt
Fri. 21/07	4.00 p.m	Pont Blanc AMS 212	Pta. S. Dabeeah
Fri. 21/07	7.30 p.m	C. Accassia P. de Flacq AS 244	Pt. S. Ramkalawon, Pta. P. Koonja
Fri. 21/07	4.00 p.m	Brissee Verdiere AS/AMS	Pt. P. Ramdu, Pta. S. Domun
Fri. 21/07	4.00 p.m	Mare la Chaux AMS	Pta. P. Lilkunt
Fri. 21/07	3.30 p.m	Trou D'Eau Douce AS /AMS	Pt. D. Ramsurrun
Sat. 22/07	4.00 p.m	Brissee Verdiere AS/AMS	Pt. P. Ramdu, Pta. S. Domun
Sun. 23/07	7.00 a.m	Lallmatie AS/AMS	Ach. R. Ramsaha
Sun. 23/07	8.00 a.m	Mare la Chaux AMS	Pta. P. Lilkunt
Mon. 24/07	4.00 p.m	Laventure AMS	Pta. S. Dabeeah
Tues. 25/07	4.30 p.m	La Forge AS 131	Pt. G. Toolooa / Pt. S. Ramkalawon
Tues. 25/07	4.00 p.m	Laventure AMS	Pta. S. Dabeeah
Tues. 25/07	3.30 p.m	Riche Mare AS /AMS	Pt. S. Sooknath , Pta P. Bhoojihawon
Wed. 26/07	5.00 p.m	Grande Retraite AMS 323	Pt. G. Toolooa
Wed. 26/07	4.00 p.m	Laventure AMS 367	Pta. S. Dabeeah
Thurs. 27/07	5.30 p.m	Clavet AS	Pt. D. Ramsurran
Thurs. 27/07	4.00 p.m	Choisy AS/AMS	Pta. P. Koonja, Pt. S. Ramkalawon
Thurs. 27/07	4.00 p.m	Camp de Masque Pave AS	Pt. Ramdu, Pta S. Dookhun
Thurs. 27/07	4.00 p.m	Laventure AMS 367	Pta. S. Dabeeah
Fri. 28/07	4.30 p.m	Alle Cocos AS419	Pt. G. Toolooa
Fri. 28/07	4.00 p.m	Laventure AS	Pta. S. Dabeeah
Fri. 28/07	4.00 p.m	C. de Masque Pave, P. Cabane	Pt. Ramdu, Pta S. Dookhun
Fri. 28/07	4.00 p.m	Mare la Chaux AS	Pta. P. Lilkunt
Fri. 28/07	7.30 p.m	C. Accassia P. de Flacq AS 244	Pt. S. Ramkalawon, Pta. P. Koonja
Fri. 28/07	4.30 p.m	Ecroignard AS90/AMS443	Pt. D. Ramsurrun,Pt. S. Sooknath
Fri. 28/07	4.30 p.m	Laventure AS/AMS	Pt. S. Ramkalawon, Pta P. Bhoojihawon
Sat. 29/07	4.00 p.m	Ecroignard AS90/AMS443	Pt. D. Ramsurrun, Pta. S.Domun
Sat. 29/07	4.00 p.m	C. de Masque Pave AS/AMS	Pt. Ramdu, Pta S. Dookhun
Sat. 29/07	7.00a.m	Lallmatie AS 250	Ach. R. Ramsaha
Sun. 30/07	8.30 a.m	Petite Retraite AS 116	Pt. S. Ramkalawon
Sun. 30/07	8.30a.m	Plaine de Gersigny AMS 476	Pta P. Bhoojihawon
Sun. 30/07	8.00 a.m	Mare la Chaux AS	Pta. P. Lilkunt
Sun. 30/07	8.00 a.m	Ecroignard AS90/AMS443	Pt. D. Ramsurrun
Sun. 30/07	3.00 p.m	St. Julien Village AS	Pt D. Ramdu
Sun. 30/07	9.00 a.m	C. de Masque Pave AS/AMS	Pt. Ramdu, Pta S. Dookhun
Mon. 31/07	9.00 a.m	Poste de Flacq AS 131	Ach. R. Ramsaha

.... to be continued

Note – (i) Mare la Chaux Arya Samaj & Arya Mahila Samaj - Every Friday at 4.00 p.m, Every Sunday at 8.00 a.m, (ii) Laventure Arya Samaj From 24 July to 06 August 2017 at 4.00 p.m to 5.30 p.m, (iii) Lallmatie Arya Samaj every Sunday at 7.00 a.m. to 8.30 a.m - Acharya Rajman Ramsaha ji, (v) Poste de Flacq Arya Samaj - Every Friday at 7.30 a.m to 8.30p.m - Satsangh

Pandit Shivsungkur Ramkalawon ji will be present in the satsangh as per his schedule of time.

D. Ramchurn	V. Kasseeah	I. Balgobin	Pt. S. Ramkalawon
President	*Secretary*	*Treasurer*	*Varisht Purohit*

DONATION - BELLE MARE ASHRAM - EXTENSION PHASE II

NAME	AMOUNT (Rs)
Mrs. Krishnawtee Ramkissoon	500.00
Mr. & Mrs. Rambarath	2,000.00
Mrs. Lalldeo Sowambur	8,000.00
Hon. Prithivirajsingh Roopun	25,000.00
Mrs. D. Koonjul	4,000.00
Dagotiere Arya Samaj (c/o Mrs. Koonjal)	1,100.00
Pt. Baneemadho Ancharaz (c/o Mrs Rutnabhooshita Puchooa, Dr. Mayda Vrath and Dr. Vidya Ancharaz)	30,000.00
Mr. Basdeo Makoona	500.00
Mrs. Damyantee Baldhun	1,500.00
Mrs. Savitri Apalsamy	100.00
Mrs. Premila Raghoobar	1,000.00
Mrs. MOS B. Beeharry	10,000.00
Pt. Sewsunkur Ramkhelawon	500.00
Member of Flacq district	100.00
Pta. Rajvansh Saulick	200.00
Mr. & Mrs. Surendra Mohess	1,000.00
Mr. Mrs. Vishwamitra Juggessur	1,000.00
Mrs. Soolbha Deelawon	200.00
Mrs. Shastrani Cheeneeya	100.00
Mrs. Deopal Kowreea	300.00
Mrs. Sanyogeeta Gungaphul	1,000.00
Mr. Aneerood Jyotee	500.00
Mrs. Aneerood Jyotee & Khesore	700.00
Mrs. Indrani Chengalaram	100.00
Mrs. Arnavali Arekion	100.00
Mrs. Nimoo Soundri	50.00
Mrs. Dewantee Ramkissoon	200.00
Mrs. Tana Armoogum	200.00
Mrs. Mantee Ramdharee	100.00
Mrs. Ati Peehay	200.00
Mrs. Kaveena Sharma	200.00
Mrs. S.Ramdeeal	100.00
Mr. & Mrs. Deobruth Jamookheea	200.00
Mr. & Mrs. Satiawantee Mudon	1,000.00
Mrs. Sheila Balgobin	1,000.00
Mrs. Chandrakanta Seegoolam	1,000.00
Mrs. K.Ramchurn, Sons & Daughters	50,000.00
Mrs. Mantee Boodhoo	50,000.00
Pt. Baneemadho Ancharaz (c/o Mrs Rutnabhooshita Puchooa & Mr. Daneelall Puchooa)	20,000.00
Mr. Iswarlall Ramkalawon	1,000.00
Dr. Komalchand Radhakissoon	1,000.00
Pt. Banslall Boojhawon	100.00
Mr. Ramkurrun (Jugghoo)	2,000.00
Hon. Rajeshwar Dayal	1,000.00
Mr. Moolraz Seedheeyan	1,000.00
Mr. Gangaparsad Ramful	1,000.00
Mr. Harish Ramchurn	3,000.00
Mr. Dharmaraj Bholah	100.00
Pt. Jugnanand Nundlall (c/o Mrs. Priyambadah Jeebaun)	50,000.00
Mr. Dussoye	600.00
Mr. Shreekeessand	500.00
Member of Flacq district	1,000.00
Mr. & Mrs. Narainduth Dookhee	5,000.00
Miss Pavishi Gopee	2,000.00
Mr. Parmanund	2,000.00
Mr. & Mrs. Pratibha Bholah	10,000.00
Dr. R.Neewoor	1,000.00
Mr. Anand Nabab	500.00
Miss Domun Mavitree	100.00
Mr. Sonalall Ramdoss	400.00
Chotuck family (Riche Mare)	10,000.00
Mrs. Parvatee Samundar	200.00
Mrs. Savitree Gopaul Jury	200.00
Mr. Niranjan Beegun	500.00
Mrs. Gianjyotee Rambhujun	800.00
Mrs. Sadam Teeluck	300.00
Mr. Prabhakar Jeewooth	500.00
Mr. Prakash Jeewooth	500.00
Miss Pushtika Devi Jokhun	1,000.00
Mr. Gamend Domah	1,000.00
Mr. Nitin Sundhoo	1,000.00
Mr. Atmaram Bundhoo	1,000.00

Types of knowledge in the Vedas

The word "Veda" is derived from the Sanskrit root word "*Vid*" which means knowledge.

What kind of knowledge are there in the Vedas?

The knowledge of the Vedas is broadly classified as :

(i) Knowledge of the world or knowledge of matter (*Aparā Vidyā*), and

(ii) Knowledge of the inner world or spiritual knowledge (*Parā Vidyā*).

Classified otherwise, (i) knowledge for day-to-day living or life skills (*vyavahāra jnāna*), and (ii) knowledge leading to salvation / moksha (*parmārtha jnāna*).

Knowledge is Power

The Vedas state that both types of knowledge ought to be acquired and both are equally important. They are not exclusively autonomous. One is incomplete without the other.

All the word knowledge (*shābdika jnāna*) of the Vedas, grammar, philosophy, astronomy, astrology, physical sciences and all such knowledge falls in the category of *aparā vidyā* or lower learning. The transcendental knowledge by which Brahman (*Ishvara* / the one eternal all-pervasive Highest Being or the Supreme Soul), the soul (*jeeva / ātmā*) and the primordial matter (*prakriti*) is realised, that by which the unseen and the unknown, is known, is the *parā vidyā* or higher learning.

The Chhandogya Upanishad is a vivid elaboration of the various types of knowledge needed to achieve the goals of human life. Narada (**N.M.**) approached sage Sanatkumara (**R.S.**) and requested him to show the path of knowledge. The conversation is as follows :

R.S. : First, let me know what you have already learnt. Then only I shall be able to teach you something beyond what you already know.

N.M. : Sir, I have learnt the Vedas, the method of remembering and repeating the Vedas, history and traditional stories, the technique of ceremonies, grammar, philosophy, mathematics, astronomy, astrology, science of augury, jugglery, logic, ethics, information about different *devās* who represent different forces or powers, science of animals, science of war, and so on.

But, I concede that I merely know the mantras (hymns) and words. I do not know the *ātman* or the soul or the spirit of things. I have heard that he who knows the *ātman* goes beyond all sorrow.

I am full of sorrow, grief and remorse. I hope and believe that you will be able to lead me out of all these by favouring me with real knowledge."

R.S. : All that you have known are but mere words, name and verbiage (*shābdika jnana*). With that knowledge you can only achieve what words (*shabda*) can achieve …nothing more!

N.M. : What is greater than name and words? I humbly request you to teach me.

R.S. : The power of speech (*vāni*)! No power of speech implies …no words, no Vedas, no truth or untruth, no religion or irreligion, no good or bad.

N.M. : What is greater than the power of speech?

R.S. : Mind is greater! The mind (*mana / chitta*) is conscious of both the word and the power of speech. When a man decides to learn any subject, he learns it …otherwise not. He performs actions only when he thinks that it is his duty to do things.

N.M. : What is greater than the mind?

R.S. : The will (*icchhā*)! Without will, nothing happens.

N.M. : What is greater than the will?

R.S. : Consciousness (*chetanā*)! Consciousness triggers mental activity (*chitta vrittiyan*). Then the will impels the mind to think; speech follows; and words take shape. If one's consciousness is not focused, he is not alert and he cannot do things.

N.M.: What is greater than consciousness?

R.S. : Meditation (*dhyāna*)! Even the earth and the sky and the mountains seem to be meditating, standing firm and steady. Without meditation, nothing would stand firm and steady.

N.M.: What is greater than meditation?

R.S.: The power of understanding [logic or *vijnāna* – between words (*shabda*), meaning (*artha*) and relation (*sambandha*)]. Good and bad, truth and untruth, the Vedas and ancillary texts, this world and beyond, all these can only be known through the power of understanding and logic.

N.M.: Anything still greater than understanding?

R.S.: Power (*shakti / bala*)! A single powerful man, with sharp intellect and understanding inspires or instils fear into numerous others.

With physical power (*shāririka bala*) one gets up and moves. With knowledge (*jnāna bala*), he becomes learned. Growing knowledge and its applications transform him into a seer, a thinker, a doer of things with unparalleled power of understanding. He acquires spiritual strength (*ātmika bala*) …the greatest force of all.

The all-Powerful (*Sarvashaktimāna*) supports / sustains everything that exists in the universe, namely - inert objects such as the earth, the sky and the mountains, as well as all living beings including humans.

N.M.: What is greater than physical power?

R.S.: Food (*anna*)! Someone who does not eat during ten consecutive days loses his powers of speech, action, hearing, and thinking. He may die. When he begins to take food his powers return to him.

N.M.: What is greater than food?"

R.S.: Water (*āpah*)! If there is no rain no food grows. Lack of water will weaken all living beings. When there are rains all living beings are quite happy."

N.M.: What is greater than water?

R.S.: Heat or light (*agni / teja*)! No heat implies no evaporation of the water from the earth …and no rain.

N.M.: What is greater than heat?

R.S.: Space (*ākāsha*)! All things happen or exist in *ākāsha* or space. The sun, the moon, the world and the universe all float therein. Space is the medium for sound waves to travel; it makes hearing possible.

N.M.: What is greater than space?

R.S.: The spirit (*ātman*)! That is the bedrock of everything else.

N.M.: Man always do things on account of the joy or the pleasure that he would get out of his actions. The expected pleasure or joy is a motivation. Joy is in abundance, not in wants; in infinity, not in limitation. Infinity is realized only by living a unitary life (harmony between thoughts, speech and actions), not by living a life impeded by conflicts or separation or isolation or limitation.

When a man sees, hears and knows not anything but the one Atman, he experiences infinity. Seeing, hearing and knowing merely things other than the Atman, yields misery and sorrow. The abundant and the infinite are immortal; the rest is mortal.

The spirit exists by its own power, support and greatness (*sarvashaktimāna*). Those who realize the spirit do so on account of self-realisation, not on account of their possessions – houses, farms, servants and lands.

The spirit is all-pervading (Omnipresent, simultaneously present everywhere). It is called the ātman. He who knows this ātman experiences his company like that of a father, mother, relative, friend or preceptor who never abandons us. He is all-blissful, full of joy. There is none greater or equal to Him. He is his own ruler, fully self-controlled.

This realization of the spirit can dawn upon us when our mind is clean and pure. Our mind would be clean and pure when we feed upon pure food. A clean and pure mind alone can concentrate upon truth. Truth, then will shine in the heart of hearts like the rising sun.

Purpose of knowledge

Aparā vidyā empowers us to adhere to the universal values of the Vedas …keep our mind, body and spirit clean and pure …saucha – external as well as internal cleanliness.

Parā vidyā leads us to spiritual realisation …to immortality …to eternal bliss …to *moksha* – liberation from the cycle of birth and death.

Study of the Vedas confers upon us both *aparā vidyā* and *parā vidyā*, material and spiritual treasures.

……to be continued

Yogi Bramdeo Mokoonlall

Bibliography : Satyārtha Prakash, RigVedādiBhashya Bhumikā, Bhumikā Bhāskar, Chhandogya Upanishad

Webliography: Internet

Dimanche 09 Juillet 2017 : Guru Purnima à l'Arya Sabha Discours de Mons. Pradeep Ramdonee

बुद्धिवृद्धिकराण्याशु धन्यानि च हितानि च ।
नित्यं शास्त्राण्वेक्षेत निगमांश्चैव वैदिकान् ।।

Le seule moyen de faire progresser l'intelligence humaine, d'acquérir de la richesse et le bonheur repose sur l'étude et l'enseignement de nos écritures saintes, les Shastras et les Védas. En découle la responsabilité de la lecture, de l'interprétation et la dissimulation du contenu des Shastras et du Védas. La transmission de bouche à l'oreille de cette connaissance a été et reste l'œuvre de nos Brahmans.

Le mantra du Yajurveda, Chapitre 26 est explicite.

यथेमां वाचं कल्याणि मावदानि जनेभ्यः ।

Les Védas ont été révélés à la création pour le bien-être de l'humanité.

Que ces connaissances soient transmises à l'ensemble de l'humanité par les Brahmans. La chaine de la connaissance Védique émaille l'ensemble de quatre échelons de la société (les Brahmans ou les intellectuels, les kshatriyas, les vaishyas et les shudras).

La progression de l'ensemble de ces quatre acteurs de la vie sociale est sine-qua-non à une vie étude approfondie des Védas, c'est-à-dire une vie conforme aux règles de la création, le respect d'autrui, la non-violence, un regard d'amitié envers l'ensemble des créatures de ce monde.

Le mois de shrāvan, l'initiative shrāvani à un objectif claire -- la purification :

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति ।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ।

Le corps c'est purifié par l'eau, l'esprit par l'acceptation de la vérité, l'âme par l'apprentissage continue et la discipline, et le cerveau par la connaissance matérielle et spirituelle.

Une renaissance nous attend. Shravani Mahotsav est le temps de se forger en un être supérieur conforme aux idéaux contenus dans le Shastras et les Védas.

Protéger la planète, agir contre le changement climatique se fera par l'action noble des Yajnas. Ceux-ci ont aussi pour mission d'unir l'ensemble de l'humanité à sa juste cause. L'éducation de la masse, le partage et le rehaussement du niveau de vie de nos concitoyens, la progression physique, sociale, mentale / morale / spirituelle, a été toujours le souci de l'Arya Samaj à Maurice et dans le monde entier.

Ce flambeau allumé ici fera le tour de l'île Maurice et de Rodrigues. Le flambeau dans une main, et les Shastras et les Védas dans l'autre, nos missionnaires iront de porte à porte pour allumer l'espoir divine là où il s'est éteint et éclaircir d'avantage nos confrères qui sont sur la bonne voie. Ensemble la contribution de chacun d'entre nous rendra ce monde meilleur.

Notre riche histoire en témoigne. Ceux qui ont ouvrés sur la voie prônée dans les Védas sont devenus des sages (Rishis) et ont laissé un immense trésor pour l'humanité. Suivons nous aussi cette trace.

Que la connaissance divine éclaircisse nos esprits.

Que le Shravani Mahotsav apporte le bien-être pour toute l'humanité.

SHRAVANI FESTIVAL

Sookraj Bissessur, B.A., Hons

"The Vedas are the scriptures of true knowledge. It is the first duty of the Aryas to read them, teach them, recite them and hear them being read." *3rd Principle of Arya Samaj*

All scholars, Eastern or Western, unanimously agree on the sublimity and noble teachings of the Vedas, which are the oldest books in the world's library. Swami Dayanand Saraswati, the great scholar and social reformer of the 19th century affirmed that the Vedas are the very source of all true knowledge.

Professor Max Muller, an eminent Sanskrit scholar, said that the Veda will forever be admired and appreciated on earth. Other western scholars, who have held the universal teachings of the Vedas in high esteem include – H.H. Wilson, A.A. Macdonell, A.B. Keith, S.T. Peterson and R.T.H. Griffith.

Human beings have always been confronting challenges in life. Psychosomatic fatigue leaves way for dullness, anxiety, confusion and sometimes even failure in life. To overcome such stress festivals have been celebrated throughout generations.

Festivals ignite a huge wave of joy, harmony, happiness, love and unity in society. Vedic celebrations are always observed as seasonal festivals. The month of Shravan (July-August) is being marked with the prominent festival of Shravani. It rekindles immense spirituality and creates an atmosphere most conducive to thoughtful spiritual studies and self-analysis.

The month of Shravan is also marked by the performance of 'yajnas' and 'satsangs' where the Vedic hymns are explained in a pious atmosphere charged with spiritual vibrations. These 'satsangs' play a significant role in deepening unity in society. During the Vedic age, this prominent festival was entirely dedicated to the study of the Vedas and performance of 'Yajnas'. In India, this month is a period of heavy rainfall and the inhabitants are less involved in outdoor activities. In the Vedic age, sages and seers left the forests and visited towns and villages to impart Vedic knowledge.

Maharshi Dayanand Saraswati, highlighted the significance of Vedic teachings in life, and had affirmed that the Vedas are the true source of all knowledge. They convey the four highly broad spectrum forms of knowledge namely: jnāna (metaphysical knowledge), karma (knowledge of action), upāsanā (knowledge of the worship of God) and vijnāna (common scientific knowledge).

In reality, our modern world is under a season of torrential rains; it is raining - mutated moral values, turmoil / scarcity of peace increase of sorrow, pain, hatred, deception and dishonesty. Shravani is a period of harvesting the healthy seeds from the vast Vedic gardens of knowledge, which when well understood and practiced would consequently sprout as strong shoots of morality, generosity, honesty, etc. transforming society into a physically, socially and spiritually healthy one. Every Arya should endeavor to understand and practice the Vedic teachings and make others understand and live the Vedic way of life.

Veda is called 'Shruti', knowledge acquired by listening, a custom that prevailed through generations. During this period everyone should get physically and mentally prepared to hear, listen and study the Vedas.